राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय
NATIONAL SCHOOL OF DRAMA
(An Autonomous Institution of the Ministry of Culture, Govt. of India)

Ministry of Culture
Government of India
सत्यमेव जयते

तृतीय वर्ष छात्र प्रस्तुति

अंतोन चेख़व कृत

The SEAGULL

सीगल

06, 07, 08, 09 July 2024
सायं 06:30 बजे प्रतिदिन
अतिरिक्त प्रदर्शन
07, 08, July दोपहर 3:30 बजे
अभिमंच सभागार
रा. ना. वि. परिसर, भगवानदास रोड,
नई दिल्ली - 110001

हिंदी अनुवाद
साबरा हबीब
परिकल्पना एवं निर्देशन
बाहारुल इस्लाम

टिकट दर :- रु 50/- 30/- 20/-
टिकट 4 जुलाई 2024 से सुबह 11:00 बजे से 1:00 बजे तक तथा दोपहर 2:00 बजे से सायं 5:00 बजे तक विद्यालय के स्वागत कक्ष से प्राप्त किये जा सकते है।

Anton Pavlovich Chekhov

Anton Pavlovich Chekhov; 29 January 1860–15 July 1904 was a Russian playwright and short-story writer. His career as a playwright produced four classics, and his best short stories are held in high esteem by writers and critics. Along with Henrik Ibsen and August Strindberg, Chekhov is often referred to as one of the three seminal figures in the birth of early modernism in the theatre. Chekhov was a physician by profession. "Medicine is my lawful wife," he once said, "and literature is my mistress."

Chekhov renounced the theatre after the reception of The Seagull in 1896, but the play was revived to acclaim in 1898 by Konstantin Stanislavski's Moscow Art Theatre, which subsequently also produced Chekhov's Uncle Vanya and premiered his last two plays, Three Sisters and The Cherry Orchard. These four works present a challenge to the acting ensemble as well as to audiences, because in place of conventional action Chekhov offers a "theatre of mood" and a "submerged life in the text." The plays that Chekhov wrote were not complex, but easy to follow, and created a somewhat haunting atmosphere for the audience.

Chekhov at first wrote stories to earn money, but as his artistic ambition grew, he made formal innovations that influenced the evolution of the modern short story. He made no apologies for the difficulties he posed to readers, insisting that the role of an artist was to ask questions, not to answer them.

अंतोन पाव्लोविच चेख़व

(29 जनवरी 1860-15 जुलाई 1904) रूसी भाषा के नाटककार और कहानीकार थे। एक नाटककार के रूप में अपने जीवन में उन्होंने चार उत्कृष्ट नाटकों का लेखन किया और उनकी सर्वश्रेष्ठ कहानियों को लेखकों और आलोचकों द्वारा उच्च सम्मान प्रदान किया गया। हेनरिक इब्सन और ऑगस्ट स्ट्रिंडबर्ग के साथ ही चेख़व को रंगमंच में प्रारम्भिक आधुनिकतावाद के उद्गम में प्रायः तीन प्राथमिक मौलिक व्यक्तित्वों में से एक के रूप में सन्दर्भित किया जाता है। व्यावसायिक रूप से चेख़व एक फ़िज़िशियन थे। उन्होंने एक बार कहा था- 'दवा मेरी क़ानूनी पत्नी है और साहित्य मेरी स्वामिनी' । चेख़व ने 1896 में 'दि सीगल' को सराहना प्राप्त होने के बाद रंगमंच को विदा कह दिया। लेकिन इस नाटक को कॉन्स्तेंतिन स्तानिस्लाव्स्की के मॉस्को आर्ट थिएटर द्वारा 1898 में व्यापक प्रसिद्धि के स्तर तक पुनर्जीवित किया गया और इसके साथ ही मॉस्को आर्ट थिएटर द्वारा चेख़व के नाटक अंकल वान्या का मंचन किया गया और उनके अन्तिम दो नाटकों 'थ्री सिस्टर्स' और 'चेरी ऑर्चर्ड' को दर्शको के लिए पहली बार प्रस्तुत किया गया । ये चारों नाटक दर्शको के साथ-साथ ही अभिनेता समूह के समक्ष भी एक चुनौती प्रस्तुत करते हैं, क्योंकि परम्परागत कार्य व्यवहार की जगह चेख़व 'थिएटर ऑफ मूड' और पाठ में 'छिपे हुए जीवन' को प्रस्तुत करते हैं। चेख़व द्वारा लिखित नाटक जटिल नहीं थे, बल्कि उनका सहजता से अनुगमन किया जा सकता था और इन्होंने दर्शको के लिए एक कुछ-कुछ निरन्तर अविस्मरणीय वातावरण की रचना की।

BAHARUL ISLAM
(Design & Direction)

Baharul Islam Graduated from NSD in 1990 specialising in Acting.

Acted in many stage plays including - Unchayi, Twelfth night, Oedipus, Seagull etc.

Directed almost 30 plays for his own group -Seagull Theatre and performed in various festivals in the country.

Directed plays for NSD Repertory, SRC, Rangayana Mysore and other groups also.

Acted in many films in Assamese, Kannada , Bengali and Hindi. Received Best actor award also.

Recently Released Film- MAIDAAN.

Written 5 books and composed music for plays and feature films.

बाहारूल इस्लाम

(अभिकल्पना एवं निर्देशन)
बाहारुल इस्लाम ने अभिनय में विशेषज्ञता के साथ वर्ष 1990 में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से स्नातक किया। उन्होंने ऊँचाई, ट्वेलफ्थ नाइट, इडिपस, सीगल आदि सहित अनेक नाटकों में अभिनय किया है। उन्होंने अपने रंग समूह सीगल थिएटर के लिए लगभग 30 नाटकों का निर्देशन किया है और देश के विभिन्न रंग महोत्सवों में प्रस्तुतियां दी हैं। बाहारुल इस्लाम ने राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय रंग मंडल, श्रीराम सेंटर, रंगायन-मैसूर, और अन्य अनेक रंग समूहों के लिए नाटकों का निर्देशन किया है और असमिया, बांग्ला और हिंदी भाषाओं की अनेक फ़िल्मों में अभिनय किया है। उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है।
बाहारुल इस्लाम ने पांच पुस्तकों का लेखन किया है और नाटकों और फ़िल्मों के लिए संगीत संयोजन भी किया है।

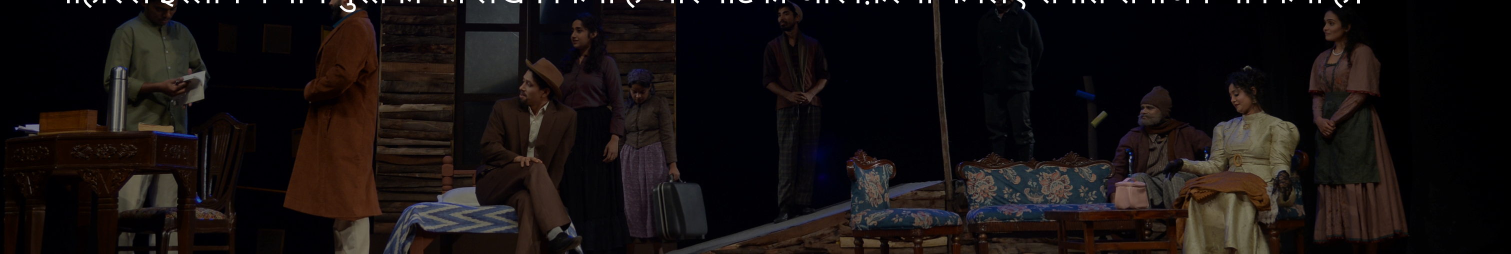

About the play

The Seagull is a play by Russian dramatist Anton Chekhov, written in 1895 and first produced in 1896. The Seagull is generally considered to be the first of his four major plays. It dramatizes the romantic and artistic conflicts between four characters: the famous middlebrow story writer Boris Trigorin, the ingenue Nina, the fading actress Irina Arkadina, and her son the symbolist playwright Konstantin Treplev. Like Chekhov's other full-length plays, The Seagull relies upon an ensemble cast of diverse, fully-developed characters. In contrast to the melodrama of mainstream 19th-century theatre, lurid actions (such as Konstantin's suicide attempts) are not shown onstage. Characters tend to speak in subtext rather than directly. The character Trigorin is considered one of Chekhov's greatest male roles. The opening night of the first production was a famous failure. Vera Komissarzhevskaya, playing Nina, was so intimidated by the hostility of the audience that she lost her voice. Chekhov left the audience and spent the last two acts behind the scenes. When supporters wrote to him that the production later became a success, he assumed that they were merely trying to be kind. When Konstantin Stanislavski, the seminal Russian theatre practitioner of the time, directed it in 1898 for his Moscow Art Theatre, the play was a triumph. Stanislavski's production became "one of the greatest events in the history of Russian theatre and one of the greatest new developments in the history of world drama”

नाटक के बारे में

‘दि सीगल’ रूसी नाटककार अंतोन चेख़व का 1895 में लिखित नाटक है जिसकी प्रथम प्रस्तुति 1896 में हुई थी। सीगल को सामान्यत: उनके चार मुख्य नाटकों में पहला नाटक माना गया है। यह चार चरित्रों: औसत स्तर के प्रसिद्ध कहानीकार बोरिस त्रिगोरिन, भोली-भाली नीना, प्रसिद्धि के ढलान पर खड़ी अभिनेत्री इरिना आर्कादिना, उसका प्रतीकवादी नाटककार बेटा कॉन्स्तेन्तिन त्रेफलेव के मध्य के रूमानी और कलात्मक द्वंद का नाटकीकरण है। चेख़व के अन्य पूर्ण कालिक नाटकों की तरह ही सीगल विविध पूर्णत: विकसित चरित्रों के एक समूह वृन्द पर निर्भर होता है। 19वीं सदी के मुख्य धारा के रंगमंच की अति नाटकीयता के विपरीत सनसनीख़ेज़ कृत्यों (जैसे कि कॉन्स्तेन्तिन की आत्महत्या का प्रयास) को मंच पर प्रदर्शित नहीं किया गया है। चरित्र सीधे-सीधे बोलने की अपेक्षा उपपाठ में अपनी बात कहने की ओर उन्मुख होते हैं। नाटक के चरित्र त्रिगोरिन को चेख़व के महानतम पुरूष चरित्रों में गिना जाता है। नाटक के मंचन की प्रथम रात्रि असफलता की एक प्रसिद्ध घटना है। नीना की भूमिका निभा रही वेरा कोमिस्सारज़ेव्स्काया दर्शकों के उपद्रव से इतनी भयभीत हो गई कि उसकी आवाज ही चली गई । चेख़व दर्शकों के बीच से उठ आए और अंतिम दो अंकों का समय उन्होंने पार्श्व मंच में बिताया। जब समर्थकों ने उन्हें ये लिखा कि बाद में प्रस्तुति सफल रही, उन्होंने ये क़यास लगाया कि वे केवल सहानुभुति जताने का प्रयास कर रहे हैं। जब उस समय के मौलिक रंग पुरुष कॉन्स्तेंतिन स्तानिस्लाव्स्की ने अपने ‘मॉस्को आर्ट थिएटर’ के लिए 1898 में इस नाटक का निर्देशन किया तो नाटक को व्यापक सफलता प्राप्त हुई। स्तानिस्लाव्सकी की प्रस्तुति रूसी रंगमंच के इतिहास की एक महानतम घटना और विश्व नाट्य के इतिहास में एक महानतम नव विकास बनी।

Director's Note

Each time I visit Chekhov, I discover my love and reverence for him. From a distance, The Seagull is a play without a protagonist, where there is a deluge of love, dreams, delusions, frustrations, and the splendor of nature. But as a regular theatre practitioner, The Seagull becomes a representation of that mirror in which not only do I see my reflection from various angles, but I can also tear the mirror apart and dissect various images into different fragments of my own vision. I see my own purpose and meaning of life and marvel at the dynamic expression called life! Through this production, especially for NSD final-year students as part of the academic study of Western Realism, I am also trying to challenge their sense of self, tweak their sensibilities, and identify their own sense of responsibility as actors. As a director who has the opportunity to express his views to the world, I can realign my purpose and vision and keep my ego in check. The Seagull is a perfect tool.

निर्देशकीय

जब भी मैं चेख़व से मिलता हूँ मैं उनके प्रति अपने प्रेम और सम्मान की खोज कर लेता हूँ। एक दूरी से (देखने पर) दि सीगल बिना नायक का एक नाटक है, जिसमें प्रेम, स्वप्नों, भ्रमों, कुंठाओं की बाढ़-भरमार है और है प्रकृति की भव्यता। लेकिन एक नियमित रंगधर्मी के रूप में दि सीगल उस दर्पण का एक प्रतिनिधित्व बन जाता है जिसमें मैं न सिर्फ़ भिन्न-भिन्न कोणों से अनेकों प्रतिबिम्ब देखता हूँ, बल्कि मैं उस दर्पण की धज्जियाँ उड़ा सकता हूँ और अपने स्वप्न-विचार के विभिन्न खंडों की विविध छवियों का विच्छेदन कर सकता हूँ। मैं जीवन के अपने उद्देश्य और अर्थ को देखता हूँ, जीवन कहे जाने वाले गतिमान भाव के चमत्कार को। इस प्रस्तुति के ज़रिये , विशेषकर राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के अंतिम वर्ष के छात्रों के लिए पाश्चात्य यथार्थवाद के अकादमिक अध्ययन के एक भाग के रूप में ,मैं अभिनेता के रूप में उनके स्व के भाव को चुनौती देने, उनकी संवेदनाओं को जानने , और अभिनेता के रूप में उनके अपने दायित्व बोध को पहचानने का प्रयास कर रहा हूँ। एक निर्देशक के रूप में, जिसके पास दुनिया के सामने अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का अवसर है, मैं अपने उदेश्य और दृष्टि को पुनर्रचित कर सकता हूँ और अपने अहं भाव पर नज़र रख सकता हूँ । 'दि सीगल' एक सम्पूर्ण उपकरण है।

Prof. Sabra Habib
(Translator)

Noted educationist and a stalwart in the field of literature and drama, Prof. Sabra Habib did her Masters and Ph.D. from the Peoples Friendship University, Moscow, after a Master's degree in English and diploma in Russian Language from the University, of Lucknow, India. Prof . Sabra Habib is an eminent fellow of Russian in the university of Lucknow .

She has extended her services as an interpreter, translators and a teacher of Russian language to the bodies like HAL ,Lucknow, Bhartendu Nataya Academy, Lucknow and many more .During the 'Festival of Russia in India' in 1987 she worked as translator and interpreter for Russian delegation. An author of ten books, besides having several articles published in National and International journal, Dr. Habib, during her distinguished career participated in various seminars and conferences across the world. In recognition of her contribution to the field of Education and Society she has been honoured with several prestigious National and International awards including 'Pushkin Award' with a Gold medal by the international Association of Teachers of Russian language and literature, U.P. Ratan Award by all India conference of Intellectuals, and many more. Prof. Habib is deeply involved with the education of women and women empowerment and is running an NGO 'Natasha Polycrats & Education centre' for unprivileged and poor women of all castes and creed to train in handicraft and educate them free of cost.

प्रो. साबरा हबीब
(अनुवादक)

प्रख्यात शिक्षाविद और साहित्य एवं नाट्य क्षेत्र की दिग्गज हस्ती प्रो. साबरा हबीब ने लखनऊ विश्वविद्यालय से अँग्रेज़ी में परास्नातक और रूसी भाषा में डिप्लोमा प्राप्त करने के पश्चात 'पीपुल्स फ्रेंडशिप युनिवर्सिटी', मॉस्को से परास्नातक और पीएच.डी. की डिग्री प्राप्त की। डॉ. साबरा हबीब लखनऊ विश्वविद्यालय की रूसी भाषा की प्रमुख अध्येता एवम् गुरू हैं। उन्होंने हिन्दुस्तान ऐरोनोटिक्स लिमिटेड, लखनऊ; भारतेन्दु नाट्य अकादमी, लखनऊ और अन्य जैसे संस्थानों के लिए रूसी भाषा के दुभाषिया , अनुवादक एवं अध्यापक के रूप में अपनी सेवाएँ दी हैं। 1987 में, भारत में 'सोवियत महोत्सव' के दौरान उन्होंने रूसी प्रतिनिधिमण्डल के लिए अनुवादक एवं दुभाषिया के रूप में कार्य किया। अनेक राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में अनेक प्रकाशित लेखों के साथ ही 10 पुस्तकों की रचयिता डॉ. हबीब ने अपने रचनात्मक जीवन के दौरान विश्व भर में, अनेक परिचर्चाओं एवं सम्मेलनों में प्रतिभागिता की। शिक्षा और समाज के क्षेत्र में उनके अतुलनीय सहयोग के लिए उन्हें अंतरराष्ट्रीय रूसी भाषा एवं साहित्य अध्यापक संघ द्वारा स्वर्ण पदक सहित पुश्किन अवॉर्ड; अखिल भारतीय बुद्धिजीवी सभा द्वारा उ.प्र. रत्न अवॉर्ड सहित अनेक सम्मानित पुरस्कारों से नवाज़ा गया है। डॉ. हबीब महिला शिक्षा एवं महिला सशक्तिकरण से गहनता से जुड़ी हुई हैं और हर जात और नस्ल की वंचित और ग़रीब महिलाओं को हस्तशिल्प में प्रशिक्षित करने और उन्हें निःशुल्क शिक्षित करने के महती अभियान के तहत ग़ैर सरकारी संगठन 'नताशा पॉलिक्राफ़्ट ऐण्ड एजुकेशन सेंटर' का संचालन कर रही हैं।

BHAGIRATHI BAI

(Costume Designer)

She was born in Gavadagere, Mysore (1963) . Diploma in dramatics from Ninasam, Karnataka . Graduated from National School of Drama ,New Delhi in 1990 with specialization in Acting . In 1991-92 obtained fellowship from NSD for a project on Solo Narrative Acting of female characters, Shakuntala ,Gandhari and Mallika. Acted with Ninasam Repertory Company during 1986-87 and 1990-91.
Acted in more than 65 plays in different languages like Kannada, Assamese, Hindi, and English. Some important productions were- Nala Damayanti, Miss Julie, Twelfth Night, Soharab Rustum, Shantata Court Chalu Ahe, Hamlet, The Father, Antar Yatra, Jatra, Ashadh Ka Ek Din, Apeksha, Seagull, Madhyavartini, Kamala Devi Chattopadhyay etc. In 1992-93 joined Tara Art of Londan as an Actress for the production of the play Heer Ranjha. Working as a Principal of Seagull Theatre Academy in Guwahati, Assam. Designed and Directed many plays- A Mid Summer Night's Dream, Antigone,Tughlak, Sarasammna Samadhi, Sambha Siva Prahasana, Puntila And His Man Matti, Kamala Devi Chattpadhyay, The Lesson, Julius Caesar, Lehron Ke Rajhans, Ashad Ka Ek Din etc. Rodor Sithi received Prag Prerona Sanman in 2017 from Prag News.

भागीरथी बाई
(वस्त्र सज्जा परिकल्पना)

भागीरथी बाई का जन्म 1963 में मैसूर के गवाडगेरे में हुआ था। मैसूर रंगायन की पूर्व निदेशक, भागीरथी बाई ने कर्नाटक के निनासम से नाट्यशास्त्र में डिप्लोमा प्राप्त किया और 1990 में अभिनय में विशेषज्ञता के साथ राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। 1991-92 में महिला पात्रों, शकुन्तला, गांधारी और मल्लिका के एकल कथात्मक अभिनय पर एक परियोजना के लिए रा.ना.वि. से फ़ेलोशिप प्राप्त की। 1986-87 और 1990-91 के दौरान निनासम रिपर्टरी कम्पनी के साथ उन्होंने एक अभिनेत्री के रूप में कार्य किया। उन्होंने कन्नड़, असमिया, हिन्दी और अँग्रेजी जैसी विभिन्न भाषाओं में 65 से अधिक नाटकों में अभिनय किया है। उनकी कुछ महत्वपूर्ण प्रस्तुतियाँ थीं- नल दमयन्ती, मिस जूली, सोहराब रुस्तम, हेमलेट, द फ़ादर, अंतर यात्रा, अपेक्षा, सीगल, मध्यबर्तिनी, कमला देवी चट्टोपाध्याय आदि। 1992-93 में लंदन के तारा आर्ट में उन्होंने एक अभिनेत्री के रूप में नाटक हीर रांझा की प्रस्तुति में भाग लिया। उन्होंने कई नाटकों की अभिकल्पना और निर्देशन किया है, जैसे- अ मिड समर नाइट्स ड्रीम, ऐण्टीगनी, तुग़लक़, सांभाशिव प्रहसन, पुंटिला ऐण्ड हिज़ मैन मैटी, जूलियस सीज़र, लहरों के राजहंस आदि। भारत सरकार के संस्कृति विभाग द्वारा उन्हें दिवयांग बच्चों के साथ काम करने के लिए जूनियर फ़ेलोशिप और सीनियर फ़ेलोशिप से सम्मानित किया गया। उन्होंने कन्नड़ से असमिया में कुछ नाटकों और लेखों का अनुवाद किया है। उन्होंने जात्रा, मध्यबर्तिनी आदि जैसे कई असमिया नाटकों का कन्नड़ भाषा में अनुवाद किया है ।उन्होंने कन्नड़, असमिया और हिंदी में कई फ़िल्मों में अभिनय किया। उन्हें 44वें राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव '97 में फ़िल्म अदज्या (असम में) में अभिनय के लिए विशेष जूरी उल्लेख के रूप में राष्ट्रीय पुरस्कार और लोनावला अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म महोत्सव 2016 में फ़िल्म रोडर सिथी के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार प्राप्त हुआ। वर्तमान में वह गुवाहाटी, असम में सीगल थिएटर अकादमी की प्रिंसिपल के रूप में कार्यरत हैं।

त्रिभुवन नाथ
(सहायक निर्देशक)

भारत की पावन नगरी वाराणसी में जन्मे और पले-बढ़े त्रिभुवन का परिवार वाराणसी, उ.प्र. से है। त्रिभुवन नाथ राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से स्नातक और बी.एच.यू. से ललित कला में परास्नातक हैं। उन्होंने एम्स्टर्डम, नीदरलैंड, इटली, रोम, फ्रांस की यात्राएँ की हैं। अपनी यात्रा के दौरान उन्होंने कला की उस प्रकृति और उसके तत्व को समझने के लिए विभिन्न कला दीर्घाओं, संग्रहालयों, प्रदर्शनियों का अवलोकन किया, जो प्रदर्शन और दृश्य कला दोनों में मौजूद हैं। उनका इरादा आने वाली पीढ़ियों के साथ अपनी विषेशज्ञता और ज्ञान को साझा करने का है जो आधुनिक जगत द्वारा उत्पन्न चुनौतियों का सामना कर सकें। अपना पाठ्यक्रम पूरा होने के तुरन्त बाद वह मुम्बई चले गए। हालाँकि उन्होंने कुछ मीडिया कार्य किए हैं लेकिन वह अभी भी छिपी प्रतिभा वाला एक नया चेहरा हैं। नाटक और फ़िल्मों में जटिल किरदारों को निभाने के उत्साह से भरपूर एक प्रशिक्षित अभिनेता के साथ एक भावुक रचनात्मक व्यक्तित्व हैं। वे व्यापक अध्ययन, अनुसंधान और चरित्र की तैयारी के माध्यम से दर्शकों और पात्रों के बीच संबंध बनाने के लिए समर्पित रचनाकर्मी हैं। राष्ट्रीय नाय्य विद्यालय, नई दिल्ली, भारत से उन्होंने 2017 - 2020 में अभिनय में स्नातक किया। वे 20 से अधिक मंच प्रस्तुतियों का हिस्सा रहे हैं।

Tribhuwan Nath
(Assistant Director)

Born & raised in Holy city of India, Varanasi, Tribhuwan's family hails from Varanasi U.P. Tribhuvan Nath is an NSD graduate and Masters in Fine Arts from BHU. He has travelled across Amsterdam, Netherland, Italy, Rome, France. During his visit, he visited various art galleries, museums, exhibitions, to understand the nature and elements of art which are present in both performing & Visual arts. He intends to impart his expertise and knowledge to the upcoming generations who can face the challenges posed by the modern world. Soon after the completion of course he moved to Mumbai, India. Though he has done some media works but he is still a fresh face to be discovered. A trained actor, passionate creative with a zeal for taking on complex characters in drama and films. Dedicated to building a connection between the audience and characters through extensive studying, research and preparation of character. `a he Graduated in Acting from National School of Drama (NSD), New Delhi, India: Aug 2017- July2020 (3-year diploma). He has been part of more than 20 stage productions and has been directed by renowned theatre personalities of India in different plays styles like Classical, Farce Shakespearean, Parsi, Realistic etc.

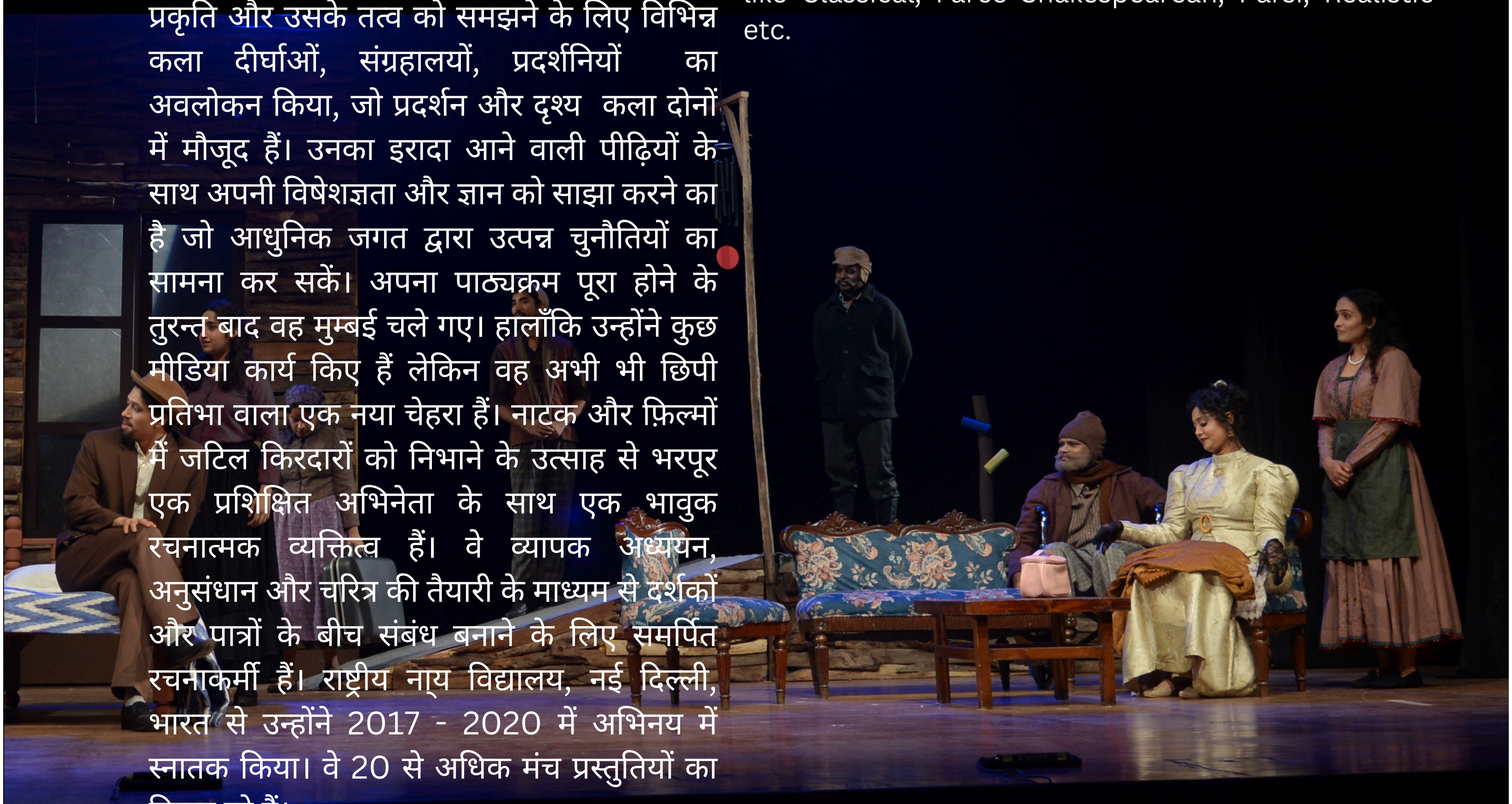

Dibosh Boruah

(Light Design)

Specialising in creating dynamic and impactful lighting designs for theatre productions, dance performances, and live events. Proven ability to work collaboratively with directors, set designers, and technical teams to enhance the visual storytelling of a performance. Adept at using the latest lighting technology and equipment to create innovative lighting solutions. Theatre works ‘residential theatre workshop 45 days (nsd) organize by Seagull Theatre Guwahati as an actor Agni Aur Barkha , The Seagull , Opeksha , Jatra , Hanush, Swabhabjato ,Siraj , Akash etc. As a light designer “Lehro Ke Rajhansh , Ou Talar Selfie , Kamla Devi , Unchayi , A Boring Story ,Bedaag, Andher Nagari Chaupat Raja etc. As a director.. Guhali Ghoror Durdashan , Siraj , Khekh Bhaunar Bhaoriya ,Khekh Nohowa Khadhu , Sulasilua Gaan , Light Sound Camera Action etc. With these plays I have performed in various National & International Theater Festivals in all over India.

दिबोश बरुआ (प्रकाश परिकल्पना)

मोरीगांव कॉलेज, मोरीगांव से हाई स्कूल तक की शिक्षा और मोरीगांव से आईटीआई की शिक्षा के साथ इस क्षेत्र में 12 वर्षों से अधिक का अनुभव रखने वाले अनुभवी प्रकाश अभिकल्पक और अँग्रेज़ी, हिन्दी और असमिया भाषाओं में पारंगत दिबोश बरुआ का जन्म 10 सितंबर 1991 को असम के मोरीगांव ज़िले के डंडुआ गांव में श्री बिमल बरुआ और श्रीमती रेणु बरुआ के परिवार में हुआ था। वे रंग प्रस्तुतियों, नृत्य प्रदर्शनों और लाइव कार्यक्रमों के लिए गतिशील और प्रभावशाली प्रकाश योजना बनाने में माहिर हैं। प्रदर्शन की दृश्य कथा को बढ़ाने के लिए निर्देशकों, दृश्यबंध अभिकल्पकों और तकनीकी टीमों के साथ मिलकर काम करने की क्षमता उन्होंने सिद्ध की है। अभिनव प्रकाश समाधान बनाने के लिए नवीनतम प्रकाश प्रौद्योगिकी और उपकरणों का उपयोग करने में कुशल हैं । उन्होंने सीगल थियेटर गुवाहाटी द्वारा आयोजित 45 दिवसीय आवासीय रंग कार्यशाला (रानावि) में भाग लिया और अग्नि और बरखा, द सीगल, ओपेक्शा, जात्रा, हानुश, स्वाभिमान, सिराज, आकाश आदि नाटकों में अभिनय किया है। एक प्रकाश अभिकल्पक के रूप में उन्होंने लहरों के राजहंस, ओउ तलार सेल्फी, कमला देवी, ऊँचाई, अ बोरिंग स्टोरी,बेदाग, अँधेर नगरी चौपट राजा आदि नाटकों के लिए काम किया है और गुहाली घोरोर दुर्दशन, सिराज, खेख भौंर भोरिया, खेख नोहोवा खाडू, सुला सिलुआ गान, लाइट साउंड कैमरा ऐक्शन आदि नाटकों का निर्देशन किया है। उन्होंने पूरे भारत भर में विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय रंग समारोहों में प्रदर्शन किया है।

GAURANGA NARAYAN DEV

(Sound Design)

I was born in a good place like Assam and have been involved in drama for about 9 years. I get experience in acting as well as doing music in various plays. I have performed at national and international theater festivals in Assam and various parts of India and this year at NSD I participated in the North East National Theater Festival. I have been acting under the leadership of Bhagirathi Bai ma'am and Baharul Islam sir, the founders of Seagull Theatre for more than 3 years and I have learned a lot about acting. I have done different plays in different parts of India like

*KISSA MURGIKA (ODALALA)STORY–DEVANURU MAHADEVA.TRANSLATION & DIRECTION – BHAGIRATHI BAI KADAM*PROSNOBODHAK.
STORY – MOHAN RAKESH , TRANSLATION & DIRECTION – NIRMALI SARMA
*ANUGYAPATRA(LICENCE) STORY- SAADT HASSAN MANTO, TRANSLATION & DIRECTION – BIKASH DAS*UNCHAYI(EROTRATUS) STORY – JEAN PAUL SARTRE WRITTEN & DIRECTION – BAHARUL ISLAM*A BORING STORY,STORY – ANTON CHEKOV, WRITTEN & DIRECTION – BAHARUL ISLAM*AKASH STORY – DR. BHABENDRA NATH SAIKIA, WRITTEN & DIRECTION – BAHARUL ISLAM*EIYARE WRITTEN BY – JAYANT KAIKINI,TRANSLATION & DIRECTION – BHAGIRATHI BAI KADAM. *KAMLA DEVI STORY – VAISALI, TRANSLATION & DIRECTION – BHAGIRATHI BAI KADAM.
* BEDAAG STORY – JAYANT KAIKINI, TRANSLATION & DIRECTION - BHAGIRATHI BAI KADAM.
AND MANY MORE.
I am very happy to finally have the opportunity again, and thanks and congratulations to the artists of NSD.

गौरांग नारायण देव
(ध्वनि अभिकल्पना)

मेरा जन्म असम जैसी अच्छी जगह में हुआ है और मैं लगभग 9 वर्षों से नाटक से जुड़ा हुआ हूँ। मुझे विभिन्न नाटकों में अभिनय के साथ-साथ संगीत का भी अनुभव है। मैंने असम और भारत के विभिन्न हिस्सों में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय थिएटर समारोहों में प्रदर्शन किया है और इस वर्ष एनएसडी में मैं उत्तर पूर्व राष्ट्रीय रंगमंच महोत्सव में भाग ले रहा हूँ। मैं 3 वर्षों से अधिक समय से सीगल थिएटर की संस्थापक भागीरथी बाई मैडम और बाहारुल इस्लाम सर के नेतृत्व में अभिनय कर रहा हूँ और मैंने अभिनय के बारे में बहुत कुछ सीखा है। मैंने भारत के विभिन्न हिस्सों में अलग-अलग नाटक किए हैं जैसे
*किस्सा मुर्गी का (ओडालाला) कहानी - देवनुरु महादेवा।अनुवाद और निर्देशन – भागीरथी बाई कदम *प्रस्नोबोधक कहानी – मोहन राकेश, अनुवाद और निर्देशन – निर्मालि सरमा,*अनुज्ञापत्र (लाइसेंस) कहानी- सादत हसन मंटो, अनुवाद और निर्देशन – बिकाश दास ऊंचाई (इरोट्रेटस) कहानी – लेखक ज्याँ पॉल सार्त्र और निर्देशन – बाहारुल इस्लाम
मुझे अंततः पुनः यह अवसर मिलने पर बहुत खुशी है, और एनएसडी के कलाकारों को धन्यवाद और बधाई।

Kshitij Bajpai

(Poster & Brochure Design)

ACADEMIC QUALIFICATION.BVA In Painting Lucknow, University in 2017.MVA In Painting Lucknow, University in 2015 Knowledge of Painting ,miniature painting, Printmaking, Poster, Brochure SOLO EXHIBITIONS. A Solo Exhibition of printmaking “After Time” Kala Srot Lucknow UP. A Solo Exhibition of printmaking “After Time 2”Assi gaat Varanasi, up EXHIBITIONS All India Fine Art & Craft Society New Delhi September, 2019 All India Fine Art & Craft Society New Delhi, 92nd Annual India Art Exhibition 2019 LALIT KALA AKADEMI NEW DELHI 1 ST PRINT BIENNALE INDIA 2018 In Side .Print on Wall Lucknow university, Lucknow in 2014 Prarambh Group Exhibition in New Delhi 2014. Annual Art Exhibition at Lucknow University ,Lucknow in 2013 Annual Art Exhibition at Lucknow University , Lucknow in 2012 Annual Art Exhibition at Lucknow University , Lucknow in 2011 WORKSHOP A Workshop on Soft Stone Ramnagar Varanasi Sponsored by D.C (Handicrafts) Ministry of Textiles, Govt. of India. Organized by DIC Varanasi Uttar Pradesh (2021) CAMP All India Fine Art & Craft Society, New Delhi 2019 AWARD All India Fine Art & Craft Society, New Delhi 92nd Annual Art Exhibition 2019 . SCHOLARSHIP YOUNG ARTIST SCHOLARSHIP ,MINISTRY OF CULTURE ,NEW DELHI,INDIA 2017.

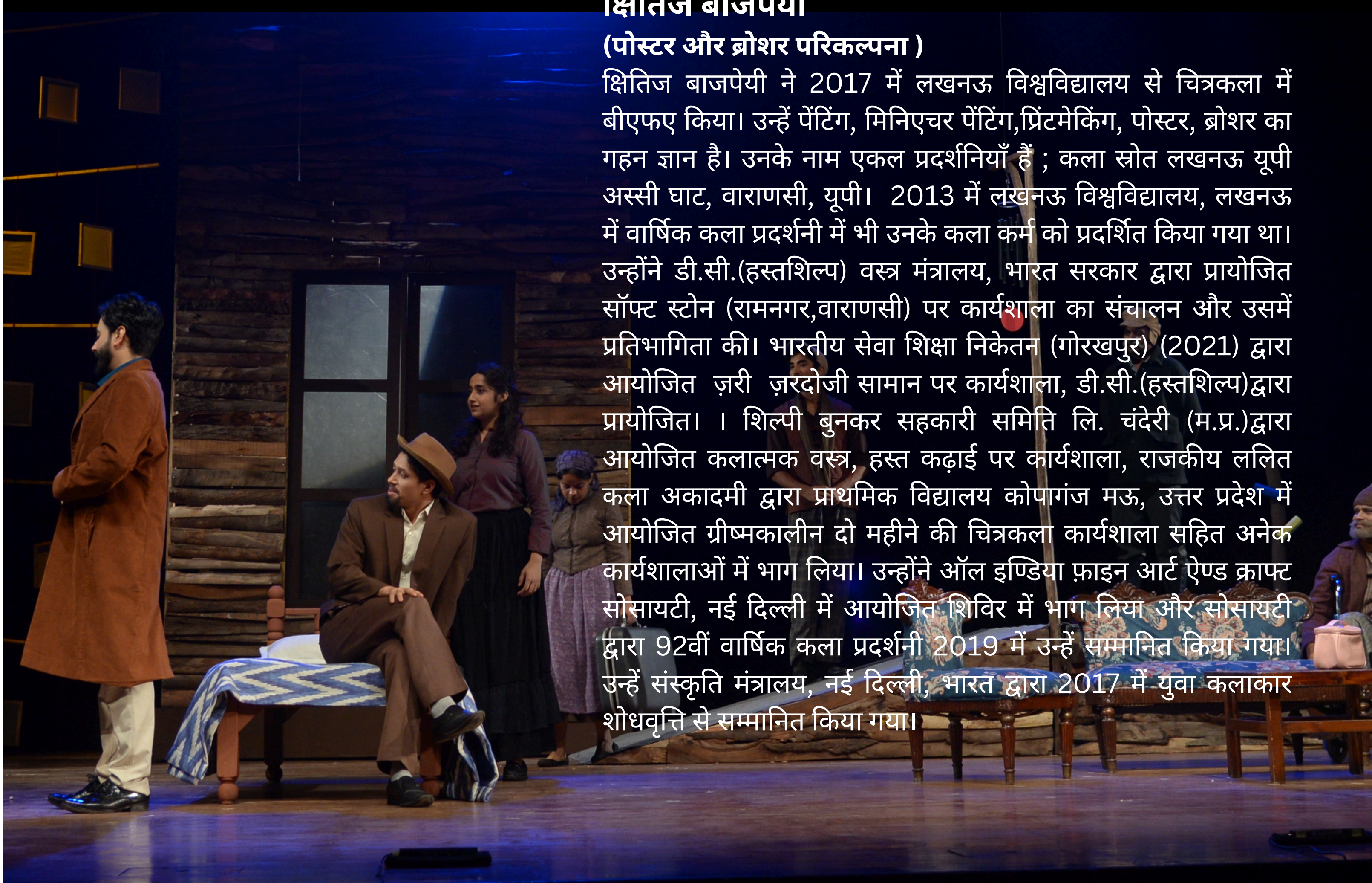

क्षितिज बाजपेयी

(पोस्टर और ब्रोशर परिकल्पना)

क्षितिज बाजपेयी ने 2017 में लखनऊ विश्वविद्यालय से चित्रकला में बीएफए किया। उन्हें पेंटिंग, मिनिएचर पेंटिंग,प्रिंटमेकिंग, पोस्टर, ब्रोशर का गहन ज्ञान है। उनके नाम एकल प्रदर्शनियाँ हैं ; कला स्रोत लखनऊ यूपी अस्सी घाट, वाराणसी, यूपी। 2013 में लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ में वार्षिक कला प्रदर्शनी में भी उनके कला कर्म को प्रदर्शित किया गया था। उन्होंने डी.सी.(हस्तशिल्प) वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित सॉफ्ट स्टोन (रामनगर,वाराणसी) पर कार्यशाला का संचालन और उसमें प्रतिभागिता की। भारतीय सेवा शिक्षा निकेतन (गोरखपुर) (2021) द्वारा आयोजित ज़री ज़रदोजी सामान पर कार्यशाला, डी.सी.(हस्तशिल्प)द्वारा प्रायोजित। । शिल्पी बुनकर सहकारी समिति लि. चंदेरी (म.प्र.)द्वारा आयोजित कलात्मक वस्त्र, हस्त कढ़ाई पर कार्यशाला, राजकीय ललित कला अकादमी द्वारा प्राथमिक विद्यालय कोपागंज मऊ, उत्तर प्रदेश में आयोजित ग्रीष्मकालीन दो महीने की चित्रकला कार्यशाला सहित अनेक कार्यशालाओं में भाग लिया। उन्होंने ऑल इण्डिया फ़ाइन आर्ट ऐण्ड क्राफ्ट सोसायटी, नई दिल्ली में आयोजित शिविर में भाग लिया और सोसायटी द्वारा 92वीं वार्षिक कला प्रदर्शनी 2019 में उन्हें सम्मानित किया गया। उन्हें संस्कृति मंत्रालय, नई दिल्ली, भारत द्वारा 2017 में युवा कलाकार शोधवृत्ति से सम्मानित किया गया।

ON STAGE

Irina Arkadina – Sangita Sarkar, Yamini Sahoo
Konstantin Trepliev – Kunal Bhange, Gokul Mipun
Piotr Sorin – Samyak Wankar
Nina Zarechnaya – Garima Singh, Unnimaya P
Ilya Shamraev – Tribhuwan Nath
Polina Shamraev – Mallika Lokhande, Mrunal
Masha Shamraev - Mallika Lokhande, Mrunal
Aleksei Trigorin – Sukhpreet Singh, Lod Akash
Evgenyi Dorn – Gokul Mipun, Kunal Bhange
Semyon Medviedenko – Lod Akash, Sukhpreet Singh

Servants – Yamini Sahoo, Sangita Sarkar, Garima Singh, Unnimaya P, Salma Dandin

मंच पर

इरिना आर्कादिना - संगीता सरकार, यामिनी साहू
कॉन्स्तेन्तिन त्रेप्लिएव - कुणाल भांगे , गोकुल मिपुन

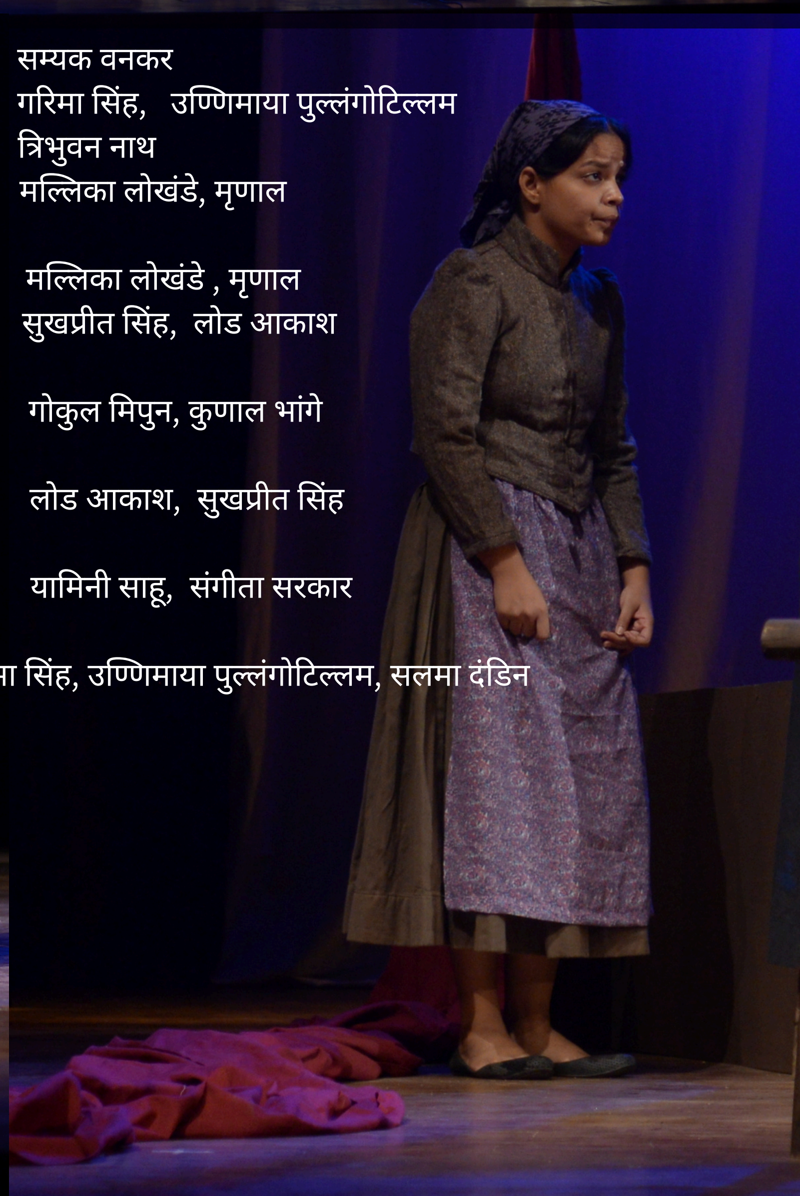

पियोत्र सोरिन - सम्यक वनकर
नीना ज़ारेशनया - गरिमा सिंह, उण्णिमाया पुल्लंगोटिल्लम
इल्या शामरायेव - त्रिभुवन नाथ
पोलिना शामरायेव - मल्लिका लोखंडे, मृणाल

माशा शामरायेव - मल्लिका लोखंडे , मृणाल
अलेक्सेई त्रिगोरिन - सुखप्रीत सिंह, लोड आकाश

एवजेनी दोर्न - गोकुल मिपुन, कुणाल भांगे

सिम्योन मेद्विदेन्को - लोड आकाश, सुखप्रीत सिंह

ल्यूकोफ़ - यामिनी साहू, संगीता सरकार

सेवक - यामिनी साहू, संगीता सरकार, गरिमा सिंह, उण्णिमाया पुल्लंगोटिल्लम, सलमा दंडिन

OF Stage

Playwright : Anton Pavlovich Chekhov
Costume Design: Bhagirathi Bai
Costume Assistant Salma Dandin
Sound Design: Gauranga Narayan Dev
Light Design: Dibosh Boruah
Poster & Brochure: Kshitij Bajpai
Set Prop: Salma Dandin
Stage Management: Salma Dandin
Painting: Tribhuwan Nath
Production Manager: Parag Sharmah
Assistant Direction: Tribhuwan Nath

Design & Direction: Baharul Islam

मंच परे

नाटककार : अंतोन पाव्लोविच चेख़व
वेशभूषा : भागीरथी बाई
वेशभूषा सहायक : सलमा दंडिन
ध्वनि : गौरांग नारायण देव
प्रकाश : दिबोश बरूआ
पोस्टर एवं ब्रोश्योर : क्षितिज बाजपेयी
दृष्यबंध सामग्री : सलमा दंडिन
चित्रकारी : त्रिभुवन नाथ
प्रस्तुति प्रबंधक: पराग सर्माह
सहायक निर्देशन : त्रिभुवन नाथ

अभिकल्पना एवं निर्देशन : बाहारूल इस्लाम

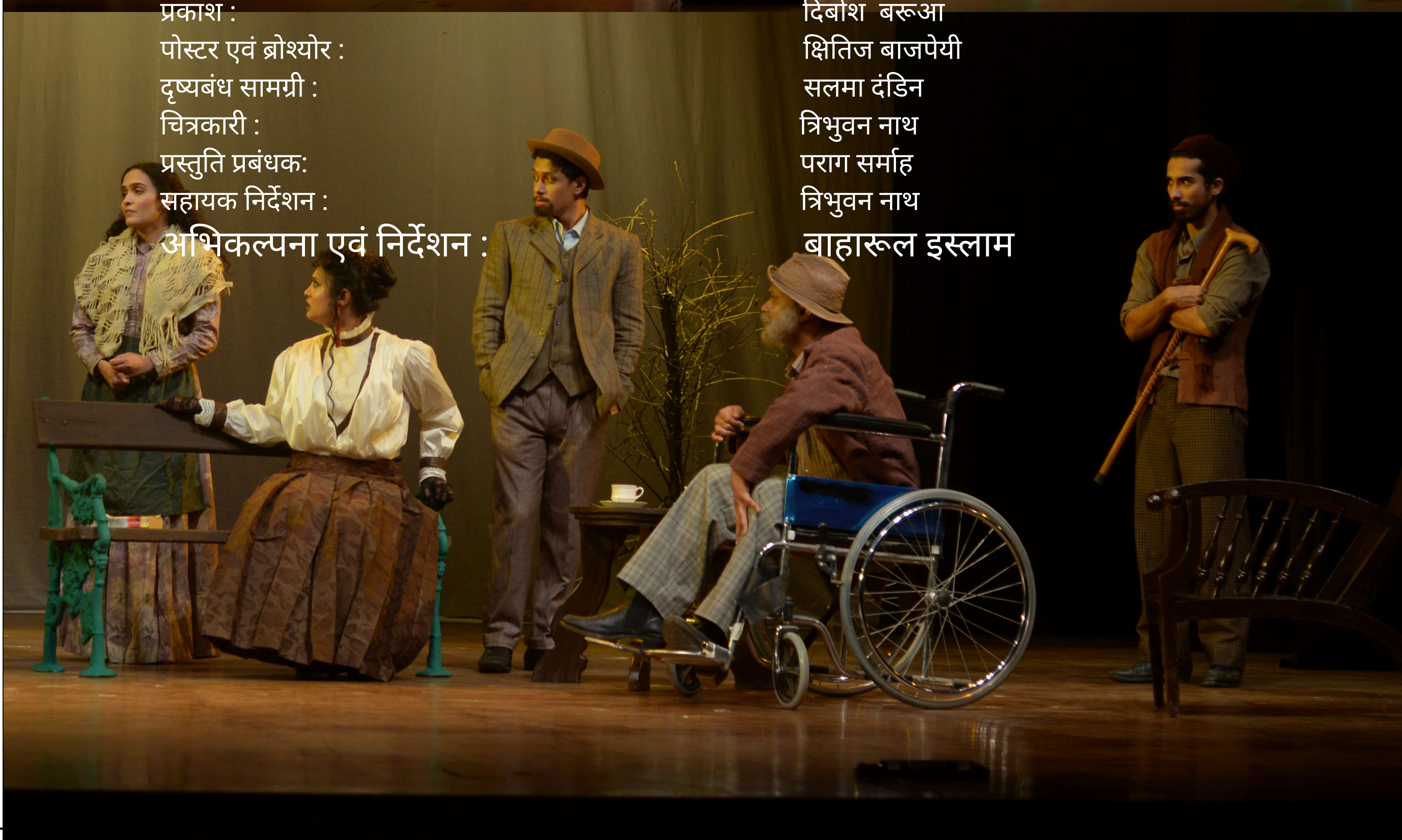

Our Sincere Thanks To

Production Department
Set & Carpentry Department
Costumes Department
Sound & Video Projection Dept.
Photography & Video Documentation Dept.
Property Departments
Library
Bookshop
Estate Department
Student Mess & Canteen Staff
All The Department of
NSD and staff members

ONSTAGE

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय
NATIONAL SCHOOL OF DRAMA
Bahawalpur House, Bhagwandas Road,
New Delhi - 110001